

Dr. Savitri Singh,
Associate Professor (Sanskrit)

B.A. (HONS) Part III

Paper - IV

Date: 17.07.2020

Topic: ऋग्वेद सूक्तानिक (ऋग्वेद) के आधार पर अग्नि देवता के स्वरूप का वर्णन

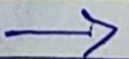
दिनांक 16.7.2020
का शोध भाग

ऋग्वेद में अग्नि देवता के त्रिविध जन्मों का वर्णन के क्रम में अग्नि का द्वितीय जन्म अतरिक्षास्व जल से माना गया है। जो वास्तव में वैद्युताग्नि है। इसके अनन्तर अग्नि का तृतीय जन्म युलोक में होता है ऐसा कहा गया। पृथ्वी पर इस उत्तम अग्नि को मातरिश्वा लाये -

स जायमानः परमे ऽथोमन्याविरग्निरभवन्मातरिश्वने।

मातरिश्वा के समानान्तर यूनानी आरण्यानों में प्रोमेटिडस की कथा मिलती है जो देवताओं के पास से अग्नि को चुराकर मनुष्यों के पास आया था। वेदों में अग्नि तथा मातरिश्वा के बीच कार्य-कारण-भाव माना गया है। सूर्य को भी चुस्वातीय अग्नि का ही रूप कहा गया है।

कभी-कभी अग्नि को 'द्विजन्मा' कहा गया है (अथै स होता यो द्विजन्मा, 1.14.15) क्योंकि पृथ्वी तथा युलोक में ब्रह्माण्ड का विभाजन मानकर दोनों लोको से अग्नि सम्बद्ध कहे गये हैं। ऐसी धारणा भी है कि वे वर्षा में युलोक से उतरकर वनस्पतियों में प्रविष्ट हो जाते हैं; इनसे वे पुनः प्रकट होते हैं।



अग्नि देवता अपने मानवीय रूप में पुरोहित,
यज्ञ के प्रमुख देवता, होता, त्त्वविक तथा सर्वाधिक
धनदाता है।

अग्निमीलै पुरोहितं यज्ञस्य देवमूर्त्विजम् ।

दोतारं रत्नधातमम् ॥ (ऋग्वेद ॥ १ ॥ १ ॥)

मनुष्यों से अग्नि का सम्बन्ध अन्य सभी देवताओं
की अपेक्षा अधिक है। वे प्रत्येक गृह में निवास
करते हैं। इसलिए वे दमूनस और गृहपति कहे जाते
हैं।

पूर्वकाल के ऋषिगण तथा आशुक्रि ऋषि भी
उन्हें पूज्य मानते हैं। जो देवताओं को यज्ञशाला में ले जाते
हैं।

अग्निः पूर्वमिन्द्रैषिभिरीड्यो नूतनैरुत ।

स देवो एह वसति ॥ २ ॥

अग्नि देवता की स्तुति से अज्ञान, यज्ञ देने वाला तथा
वीर सैतानों से सम्बन्धित धन प्राप्त होता है।

अग्निमा शयिमश्नवत्पोषमेव दिवेदिवे ।

यज्ञसं वीरवत्तमम् ॥ ३ ॥

जिस अग्नि में यज्ञ में अग्नि
विद्यमान रहते हैं, उसी यज्ञ में अर्पित पदार्थ
देवताओं तक पहुँचता है। अग्नि के कर्म असाभा-
न्य हैं। वे सत्य के स्वल्प हैं, उनकी कीर्ति
विषिचल्प है। यज्ञ कर्ता के कल्याण के लिए
अग्नि सदा सन्नद्ध है। स्तुतिकर्ता लोग प्रतिदिन
उन्हें प्रणाम करते हैं। यज्ञों की रक्षा करना, यज्ञकर्म
से मिलने वाले फल को अजमान तक पहुँचाना तथा